लाल और नीली पेन्सिलें

समान पर समान नहीं



चित्रांकन
मिष्टुनी चौधरी
अनुवाद
डॉ. निधि शर्मा

ISBN 978-81-237-9134-0

पहला ईप्रिंट संस्करण : 2020

Lal Aur Neelee Pencil : Saman Par Saman Nahi *(Hindi)*

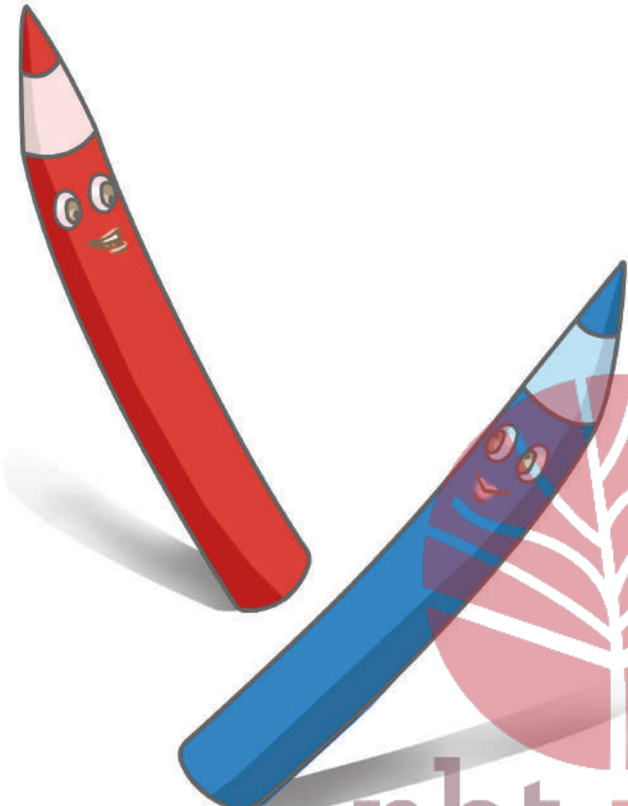
₹ 35.00

ईप्रिंट द्वारा ऑर्नट टेक्नो सविसेज प्रा.लि.

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फ़ेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

लाल और नीली पेन्सिलें

समान पर समान नहीं



चित्रांकन

मिष्टुनी चौधरी

अनुवाद

डॉ. निधि शर्मा

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

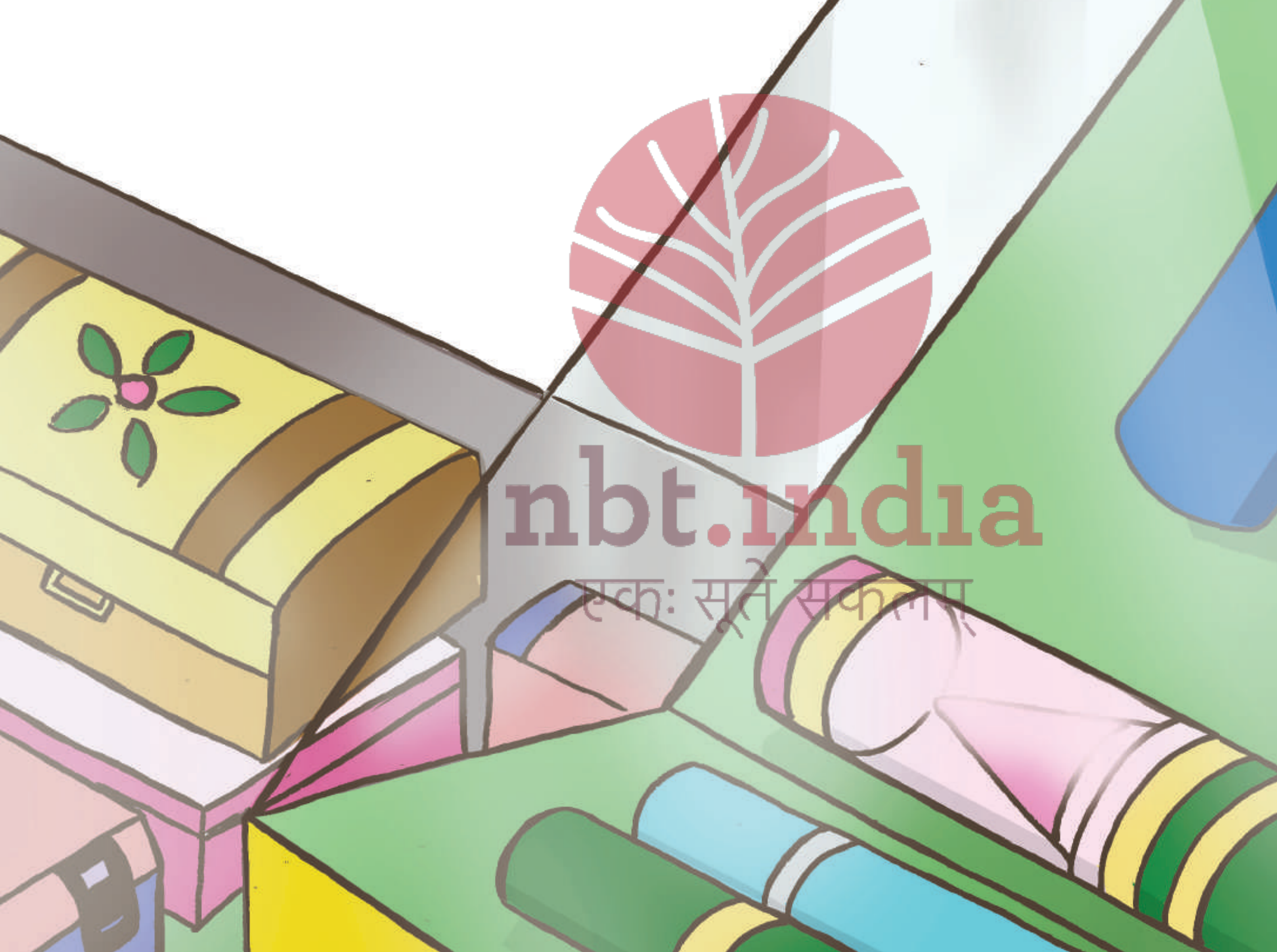
एक स्टेशनरी की दुकान के शोकेश में लाल पेन्सिल और नीली पेन्सिल हँसी-खुशी एक साथ बैठी हुई थीं। वे वहाँ किसी के द्वारा खरीदे जाने का इंतजार कर रही थीं। दोनों ही पेन्सिलें अपने भविष्य के बारे में सुनहरे सपने देख रही थीं।

लाल पेन्सिल नीली पेन्सिल से बोली, ''पता नहीं कि मैं यहाँ से कहाँ जाऊँगी! मैं यह आशा करती हूँ कि हम दोनों एक ही स्थान पर जाएँ।''

नीली पेन्सिल ने उत्तर दिया, ''यदि हम अलग-अलग जगहों पर भी जाते हैं, तब भी हम हमेशा अच्छे दोस्त ही रहेंगे।''

लाल पेन्सिल बोली, ''मुझे पूरा विश्वास है कि हम किसी न किसी दिन, कहीं न कहीं अवश्य ही मिलेंगे।''

तब नीली पेन्सिल ने कहा, ''हाँ! बिल्कुल सही! और तब हम एक-दूसरे को अपने-अपने जीवन की कहानी सुनाएँगे।''





एक दिन सेना का एक जवान दुकान में आया। उसने अंगुली से लाल पेन्सिल की तरफ इशारा किया और दुकानदार से लाल पेन्सिल देने के लिए कहा।

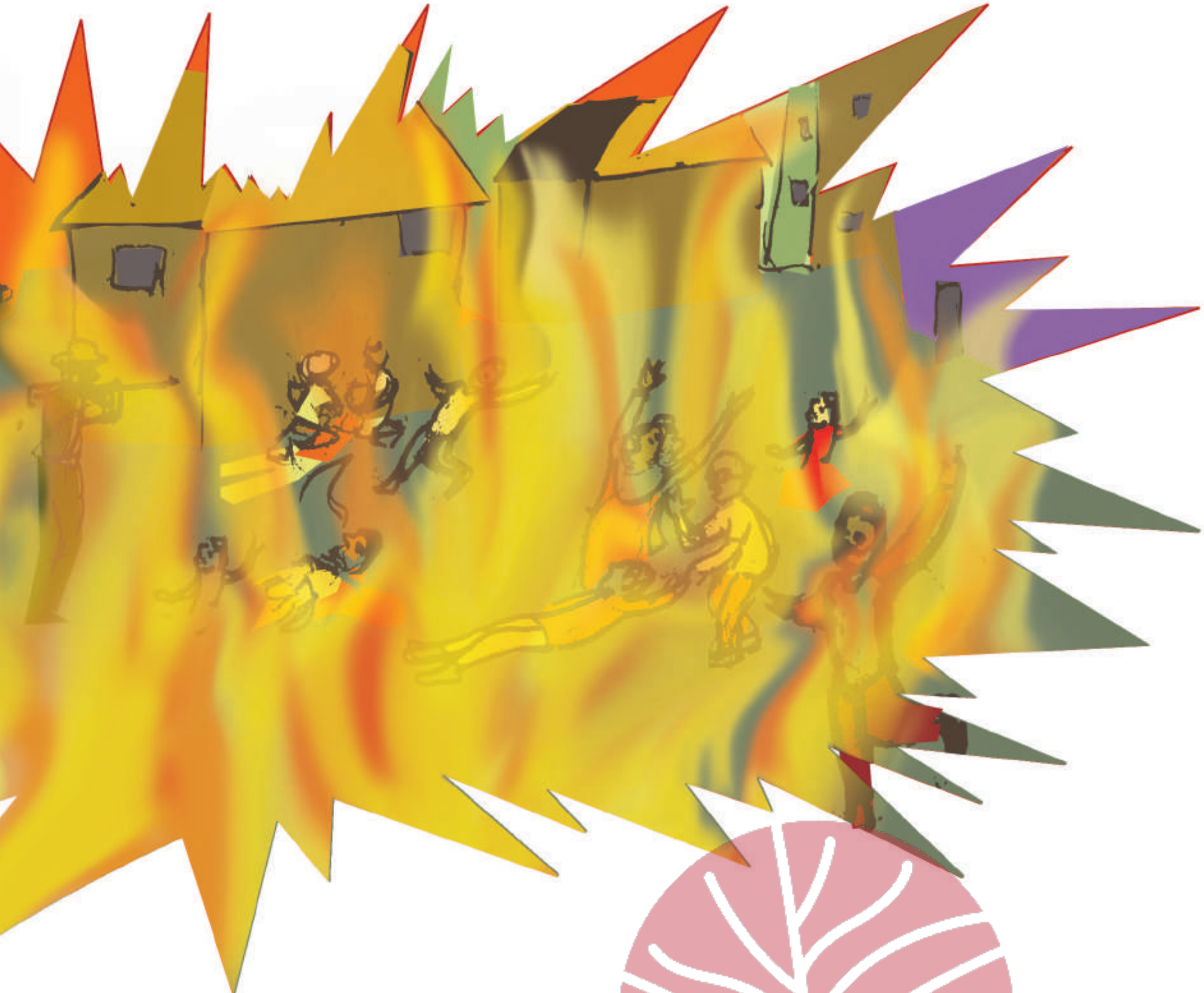


दुकानदार ने शाकेश से लाल पेन्सिल उठा ली। वह उसे एक कागज के लिफाफे में रखने की वाला था, परंतु जवान ने उस पेन्सिल को दुकानदार से लेकर अपने हाथ में कस कर पकड़ दिया और उसे अपनी कमीज की जेब में रख लिया।



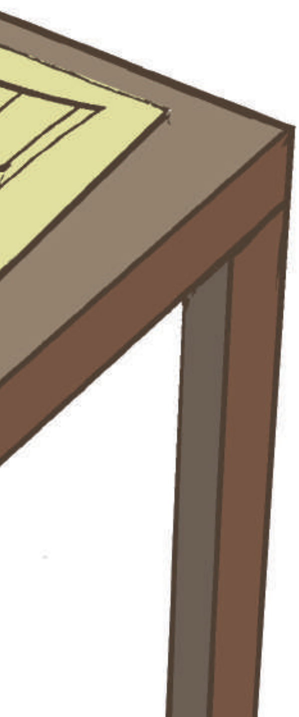
जवान अपने दफ्तर चला गया और वहाँ जाकर उसने अपनी जेब से लाल पेन्सिल निकाली। उसके बाद उसने अपनी मेज पर एक नक्शा रखा और बम गिराने के लिए उसने लाल पेन्सिल से उसमें कुछ स्थान चिह्नित किए। दो दिन के बाद कुछ जगहों पर बम गिराए गए थे। बहुत सारे घर नष्ट हो गए थे। बहुत सारे लोग मारे गए थे।





जवान बोला, ''हम कामयाब हुए हैं, परंतु हमें अभी और ज्यादा शत्रुओं को मारना होगा।''

लाल पेन्सिल पृथ्वी को लाल रक्त से रंगा हुआ देखकर बहुत ही दुखी थी। जितना ज्यादा कठोर परिश्रम लाल पेन्सिल को करना पड़ता था उतना ही ज्यादा रक्त बहता था। वक्त के बीतने के साथ-साथ यह लंबी लाल पेन्सिल बहुत ही छोटी रह गई।



तीन दिन बाद, एक छोटे से गाँव से एक स्कूल की अध्यापिका दुकान में आई। उसने दुकानदार से नीली पेन्सिल माँगी। दुकानदार ने एक सुंदर से लिफाफे में रखकर वह पेन्सिल उसे दी। उसने उसे सावधानी से अपने बैग में रखा और अपने घर चली गई। वह उदार एवं विनम्र महिला थी। उसके बैग के एक कोने में बैठकर नीली पेन्सिल बहुत खुश थी।

अगली सुबह, वह अध्यापिका नीली पेन्सिल लेकर विद्यालय गई। अध्यापिका उस नीली पेन्सिल का उपयोग अपने विद्यार्थियों की कॉपियाँ जाँचने के लिए करती थीं। वह हमेशा अत्यंत उत्साहवर्धक टिप्पणियाँ लिखती थी।



एक दिन अध्यापिका ने कुछ विद्यार्थियों को दुखी पाया। उसने उनसे उनके दुखी होने का कारण पूछा। पूछने पर उन्हें पता चला कि उन विद्यार्थियों के माता-पिता युद्ध में कहीं खो गए हैं।




US PLANT

एक दिन उस अध्यापिका ने नीली पेन्सिल से उन बच्चों को पत्र लिखे। ''बच्चो! दुखी मत हो। यदि तुम ठीक ढंग से पढ़ाई करोगे तो तुम्हारे माता-पिता, इस समय जहाँ कहीं भी हैं, अवश्य ही प्रसन्न होंगे।''

यह पढ़कर बच्चों के दिल को बड़ी प्रसन्नता महसूस हुई। उनकी आँखों में खुशी के आँसू थे।

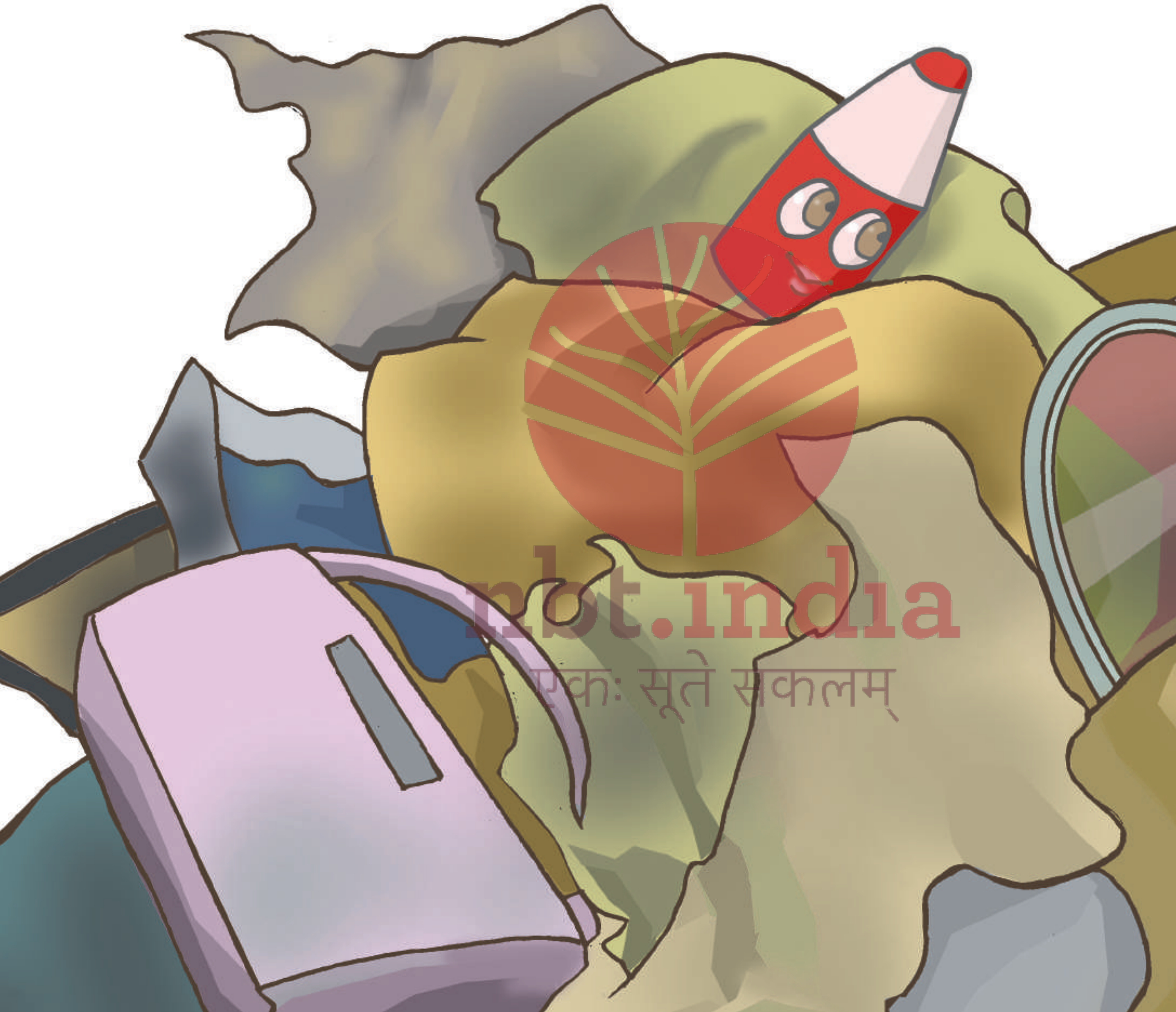
'अध्यापिका ने मेरा उपयोग बच्चों के दिलों से उदासी दूर करने के लिए किया है। उन्होंने मेरी जिंदगी को सार्थक बना दिया है', नीली पेन्सिल ने सोचा। नीली पेन्सिल अत्यंत व्यस्त रहने लगी। जैसे-जैसे समय बीता, वह भी छोटी हो गई।

एक दिन कुछ विद्यार्थी फूल तोड़ रहे थे और बगीचे के पेड़ों की छोटी-छोटी डालियाँ तहस-नहस कर रहे थे। अध्यापिका ने उन्हें डाँटा नहीं परंतु उन्हें कक्षा में बुलाया और चार्ट पेपर पर नीली पेन्सिल से लिखा, ''आओ मिलकर पेड़ लगाएँ। पेड़ों की देखभाल करें एवं उनसे स्वास्थ्यवर्धक फल प्राप्त करें।''

विद्यार्थियों ने वह संदेश पढ़ा और उन्होंने पेड़ों की महत्ता समझी। अगले दिन वे सभी बच्चे पेड़ों में पानी डालते हुए दिखे।

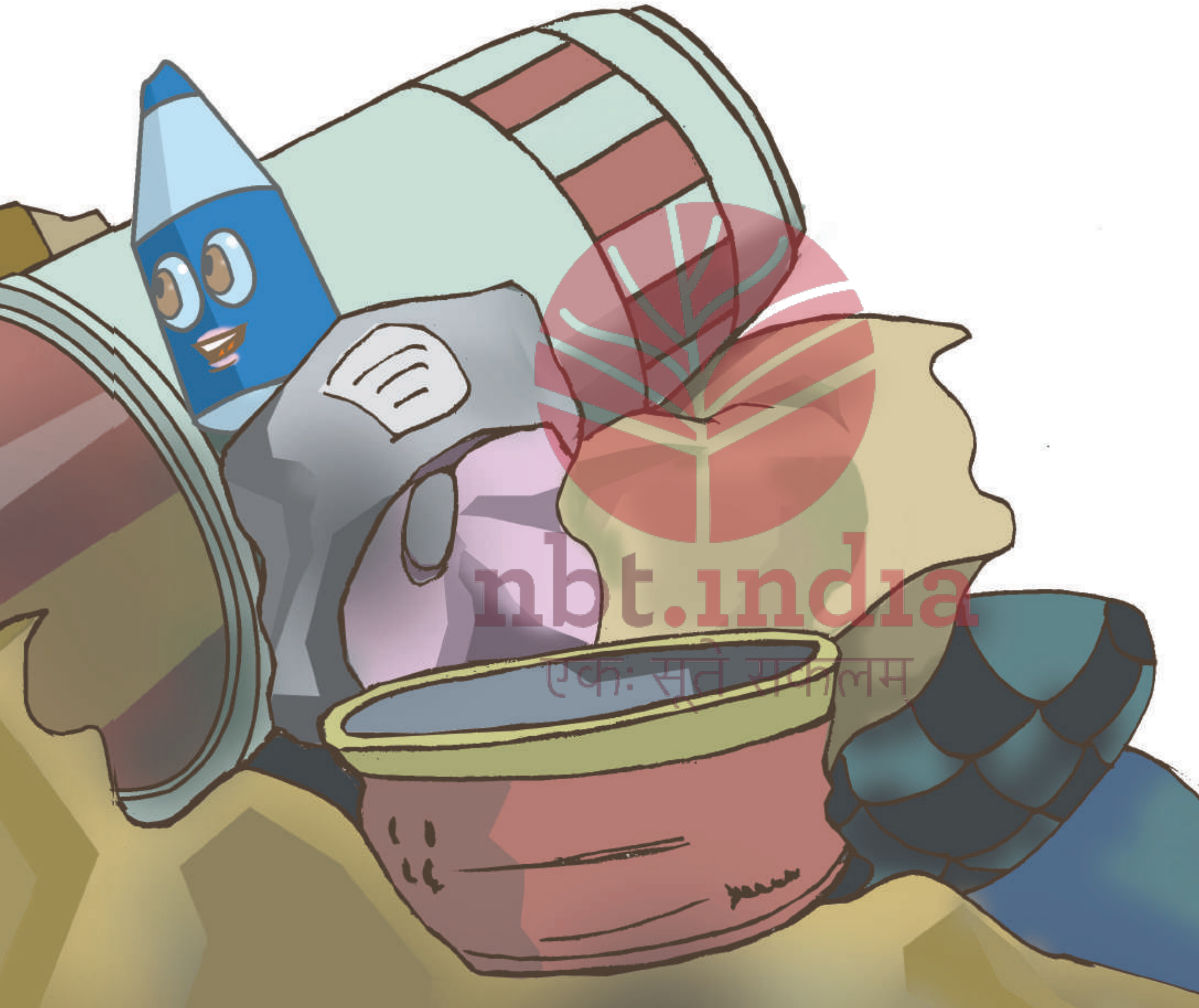


नीली पेन्सिल और लाल पेन्सिल बहुत छोटी हो गईं थीं और अब वे हाथ में पकड़ने लायक भी नहीं रही थी। उपयोग में न आने के कारण वे दोनों अब फेंक दी गईं थीं। और जैसा कि उनके भाग्य में बदा था, वे दोनों एक ही कूड़े के ढेर में आ गिरीं। उन दोनों ने एक-दूसरे को बहुत ही आश्चर्य से देखा।

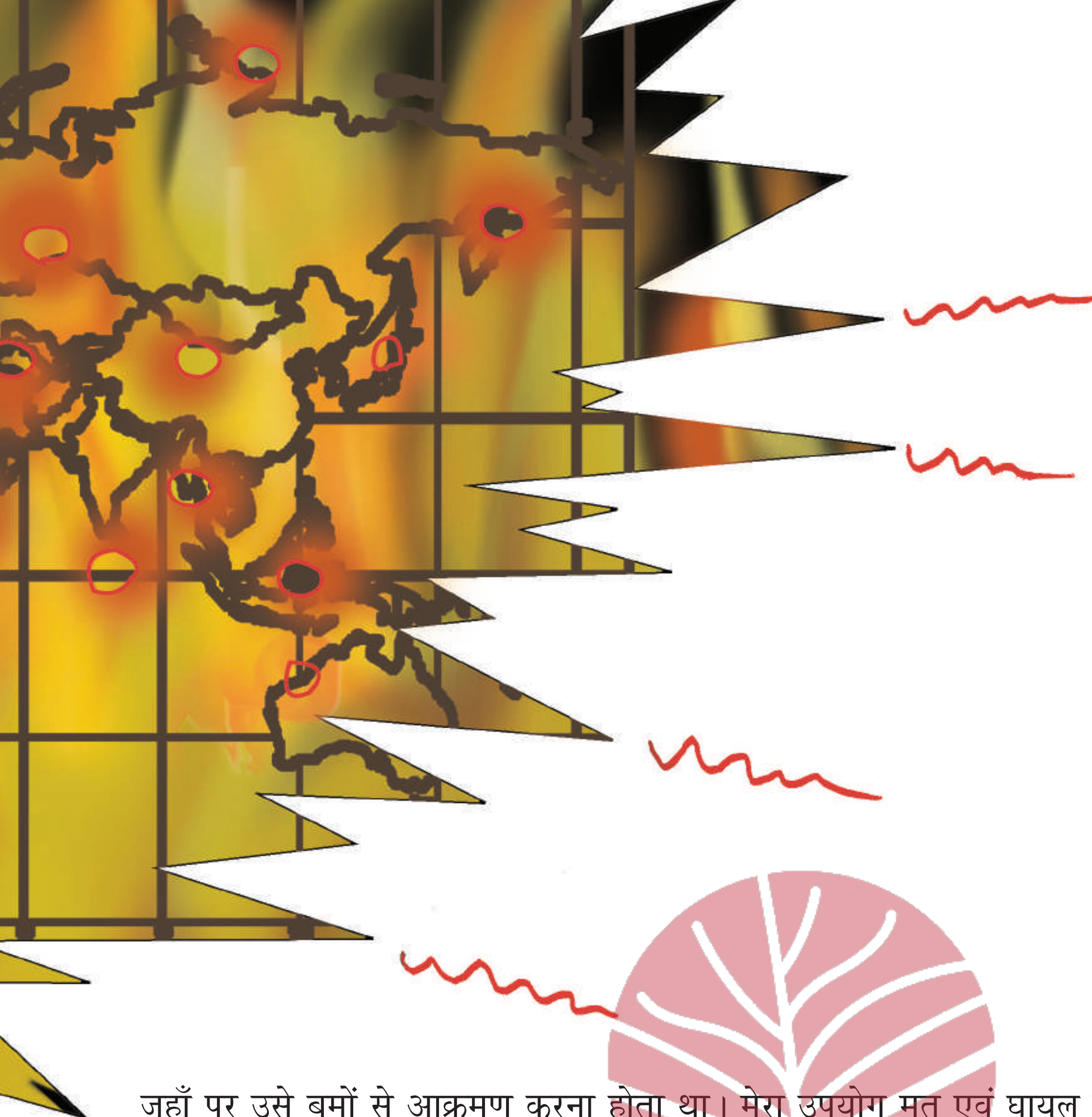


नीली पेन्सिल ने लाली पेन्सिल से पूछा, ‘‘हे मेरी मित्र, कैसी हो? तुम भी मेरी तरह से काफी छोटी हो गई हो। तुम्हारा जीवन कैसा बीता?’’

लाल पेन्सिल की आँखों में आँसू आ गए। वह दुखी आवाज में बोली, ‘‘सेना के एक जवान ने मुझे खरीदा था। वह मेरा प्रयोग उन जगहों पर निशान लगाने के लिए करता था,







जहाँ पर उसे बमों से आक्रमण करना होता था। मेरा उपयोग मृत एवं घायल मनुष्यों की गिनती करने के लिए भी होता था। मेरे हृदय में बहुत दर्द भरा है। खैर छोड़ो! मुझे बताओ, तुम्हारी जिंदगी कैसी बीती? तुम तो काफी खुश दिखाई दे रही हो।''

नीली पेन्सिल के चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कुराहट थी। वह बोली, ''एक अध्यापिका ने मुझे खरीदा और मेरा उपयोग वह अपने विद्यार्थियों के लिए मीठे वचन लिखने के लिए करती थी। वह उन्हें कभी भी डाँटती-फटकारती नहीं थी। वह हमेशा अपने दुखी विद्यार्थियों के लिए उत्साहवर्धक पत्र लिखने के लिए मेरा उपयोग करती थी। इस प्रकार, मृदु वचन लिखकर, वह उनके चेहरों पर प्रसन्नता लाती थी। भई! सच कहूँ, मेरा जीवन तो बहुत ही अच्छा बीता।''



लाल पेन्सिल बोली, ''हम दोनों एक ही दुकान में थे परंतु फिर भी हम दोनों के पास अपने-अपने जीवन की अलग-अलग कहानी है। हमारी खुशी और दुख उन लोगों के हाथों में थे जिन्होंने हमारा उपयोग किया।''

''समान पर समान नहीं''

“एशिया के बच्चों के लिए शांति पर पुस्तकें” विषय पर सहप्रकाशन-कार्यक्रम

टकराव और युद्ध के कुप्रभावों से बच्चे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। चित्रात्मक पुस्तकों के माध्यम से अपने साथी बच्चों के प्रति बगैर किसी भेदभाव के शांति, प्रेम और सौहार्द पैदा करने के उद्देश्य से 1998 में प्रारंभ की गई परियोजना ‘मेरी आवाज सुनो’ **(Listen to Me)** का समापन वर्ष 2010 में हुआ। यह परियोजना भारत, पाकिस्तान, नेपाल और जापान के विशेषज्ञों का संयुक्त प्रयास था। इसका आयोजन इंटरनेशनल सेंटर फॉर लिटरेसी एंड कल्चर (आईसीएलसी) टोक्यो ने ‘द पीस फाउंडेशन फार हिरोशिमा’ और ‘जापान फाउंडेशन’ के सहयोग से काठमांडो में किया था।

परियोजना के सहभागी

भारत : वर्षा दास, जगदीश जोशी, शेख नाजीर और मलिक सज्जाद रसूल।

पाकिस्तान : शाहिद मेहमूद, फौजिया अजीज मीनाल्लाह, शौकत अली, मोमिना एस. महमूद और जिया जैरी।

नेपाल : शरद रंजीत, टेक वीर मुखिया।

जापान : रोतो त्सुदा, अकीको वदा, मिकि तनाए, मिनाको मनोमे और कोहेई ओटा।

आईसीएलसी : शिन्जी ताजिमा और ताइको कुरो काना।



एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-237-7019-2
पहला ईप्रिट संस्करण : 2020

Lal Aur Neelee Pencil : Saman Par Saman Nahi *(Hindi)*
₹ 40.00
ईप्रिट द्वारा ऑनेट टेक्नो सविसेज प्रा.लि.
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फ़ेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in